International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 407-409

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 407-409
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 10-08-2020
Accepted: 13-09-2020

देवराज पाणिग्राही
सहायक अध्यापक, संस्कृत विभाग,
त्रिपुरा केन्द्रिय विश्वविद्यालय,
अगरतला, त्रिपुरा, भारत

Corresponding Author:
देवराज पाणिग्राही
सहायक अध्यापक, संस्कृत विभाग,
त्रिपुरा केन्द्रिय विश्वविद्यालय,
अगरतला, त्रिपुरा, भारत

त्रिपुरा में प्रतिष्ठित शिवाराधना पुण्यक्षेत्र उनकोटि

देवराज पाणिग्राही

सारांश:
त्रिपुरा का एक जिल्ला उनकोटी है, यह शैवतीर्थ के रूप में माना जाता है। जनजातीयां शैव तथा शाक्त की उपासना करती आई है। ११-१२वीं शताब्दि ए. डि. का यह तीर्थ है। जो कि, अगरतला से १८० कि. मी. दूर पर है। उनकोटि का शाब्दिक अर्थ है – 'एककोटि से एक कम'। यहां के शैलिचत्र के चित्रकार 'युवल' नामक इजरायिल है। कुछ विद्वान् इसको सातवीं से नवीं शताब्दी का ही मानते है, पर कुछ का मानना है कि, शिल्प बारहवीं शताब्दि के ही है। यहां विशालिशलाओं पर उत्कीर्ण शिव की प्रतिमा का उत्कृष्ट रूपांकन दर्शकों को सहज ही आकर्षित करता है।

मुख्य शब्द: उनकोटी, शक्तिपीठ, साधना, सनातनसभ्यता, शिलालेख, राजमाला, कुम्भकार, मनुनदी, शिल्पाकृति, उत्कीर्ण, शिवपन्थ, हठयोगी, भैरवगण, रूपांकन

प्रस्तावना:
उपक्रम:

पूर्वोत्तरक्षेत्रे स्थित त्रिपुराभिध राज्यकम्।
तत्र भात्युनकोटिस्तु शैवपीठ पुरातनी ॥ (स्वकीयम्)

इतिहास के पन्नों पर त्रिपुरा की भूमि पर शाक्त और शैव पन्थ की मुख्य रूप से उपासना होती रही है। जनजातीय क्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठित पूर्वोत्तरभाग में विराजित भगवती त्रिपुरसुन्दरी शक्तिपीठ को चौंषठ शक्तिपीठों में पिरगिणत किया गया है। यह देवीपीठ सनातन आस्था का पुण्यतीर्थ है। अगरतला से लग-भग ६० कि.मी. की दूरी पर उदयपुर सहर के समीप स्थित यह देवीपीठ माताबाडी के रूप से लोगों में ख्याति प्राप्ति है। इस स्थान पर बलि समर्पण का महत्व अधिक मान्यता प्राप्त है। याहां दूर-दूर से लोग अपनी साधना के लिये आकर भगवती की साधना कर अभीष्ट प्रप्त करते हैं। भारतभूमि का सांस्कृतिक-इतिहास विविधताओं और विलक्षणताओं का आकर है। हमारे देश भारतवर्ष की पावनधरा पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण दक् पर्यन्त सनातनसभ्यता और संस्कृति के ऐितहासिक साक्ष्यों को अपने प्राकृतिक सौन्दर्य के आँचल में समेटे हुए है।

इतिहास के दृष्टि में त्रिपुरा:
त्रिपुरा राज्य का भौगोलिक इितवृत्त प्राकृतिक सुन्दरता से पिरपूर्ण है। आठ जिलों में विभाजित यह राज्य सांस्कृतिक परंम्पराओं से भी सम्पन्न है। यहां का जनजातिओं का निवास त्रिपुरा की वनप्रान्तर की गुहाओं तथा वन में विक्षिप्त रूप में अवस्थित है। मुख्यधारा से पिछडे जनजातियलोग आज भी जंगलों में ही अपने अस्मता की रक्षार्थ निवास करते हैं। त्रिपुरा का उल्लेख महाभारत, विभिन्न पुराणों तथा अशोक के शिलालेख में मिलता है। महाभारत के कर्ण पर्व में उल्लेख है कि, घोष यात्रा के समय त्रिपुरीराजा के सम्मिलित होने का प्रमाण मिलता है–

वत्सभूमिं विनिर्जित्य केरलां मृत्तिकावतीम्।
मोहनं पत्तनं चैव त्रिपुरीं कोशलां तथा॥ [१]

एक सन्दर्भ यह भी मिलता है कि महाराज युधिष्ठिर ने राजसूय यज्ञ में याहां के राजा, जो कि "किरात" के नाम से प्रख्यात थे को आमन्त्रित किया था। किरात वनवासीजनजाति माना जाता है। त्रिपुरी राजावंश भी इसी परम्परा के रहे हैं इसीलिये महाराज युधिष्ठिर के द्वारा इन्हें आमन्त्रित कर आदरभाव प्रकट किया गया होगा' [२] राजमाला के अनुसार किरातभूमि से त्रिपुरा को जाना जाता है।–

तप्तकुञ्ज समारभ्य रामक्षेत्रान्तकशिरे।
किरातदेशो देवेशि विश्वशैलेऽवतिष्ठति ॥

किरातदेश वा त्रिपुरा ये दोनों राज्य अिभन्न है। यह किरात राज्य किस कारण किस समय त्रिपुरा नाम से विख्यात हुआ, इस सम्बन्ध में विद्वानों में परस्पर विरोधापन्न मत-मतान्तर दिखलाई देते हैं। याहां पूर्व में चर्चित तथ्य ही समर्थित सारभूत मान्य है। महाभारत के सभापर्व का भी सन्दर्भ मिलता है जहां लिखा है कि-

त्रिपुरा स्ववशे कृत्वा राजानतौ जसम्।
निजग्रह महाबाह्वात्मरसा पौरवेश्वर:॥

भीष्मपर्व के भी सन्दर्भ प्राप्त हुए है, जहां त्रिपुरीराजा का उल्लेख है-

द्रोनोदन्तरं यत्तो भगवन्त: प्रतापवान्।
मागधैश्च कलिङ्गैश्च पिशाचैश्च विशाम्पते॥
प्राग्ज्योतिषादनूनृप: कोशल्योऽथ बृहद्बल:।
मेकालै: कुरुविदैश्च त्रैपुरे च समन्वित:॥ [३]

आजादी के बाद भारतीय गणराज्य में विलय के पूर्व यह एकराजशाही थी। उदयपुर इसकी राजाधानी थी जिसे १८वीं सदी में पुराने अगरतला में लाया गया और १९वीं सदी में वर्तमान के अगरतला में प्रतिष्ठापित किया गया है। राजावीरचन्द्र माणिक्यबाहादुर देवबर्मा ने अपने राज्य का शासन ब्रिटिश-भारत की तर्ज पर चलाया। गणमुक्तिपिरषद द्वारा चलाए गये आन्दोलनों से यह राज्य सन् १९४९ में भारतीय गणराज्य में सम्मिलित हुआ। सन् १९७१ में बांलादेश के निर्माण के पश्चात् यह सशस्त्र संघर्ष आरम्भ हो गया। त्रिपुरा नेशनल वलेन्तियर्स तथा नेश्नल् लिबरेशन् फ्रन्ट आँफ त्रिपुरा जैसे संगठनों ने स्थानीय तथाकिथत बिहरागत समाज के लोगों को जो कि स्थानीय अधिवासी के रूप में पिरिचत थे, उनसे यहां के जनजातिसमाज का अन्तर्द्वेष चल रहा था, जिसका कि तत्कालीनशासन व्यवस्था के द्वारा शान्तिपूर्वक समाधान किया जाकर सामाजिक सौहार्द्य का वातावरण स्थापित किया गया| त्रिपुरा का बडा पुराना लम्बा इतिहास है। इसकी अपनी अनोखी जनजातीय संस्कृति और यहां चर्चित लोकगाथाएं त्रिपुरा का सांस्कृतिक मानिचत्र मानसपटल पर स्थापित करती है। राजमाला नामक पुस्तक में त्रिपुरानरेश के बारे में वर्णन मिलता है। महाभारत एवं पुराण में भी उल्लेख मिलता है कि, राजमाला के अनुसार त्रिपुरा के शासकों को 'फा' उपनाम से पुकारा जाता था। 'फा' का अर्थ पिता होता है। १४वीं शताब्दि में बंगाल के शासक दारा त्रिपुरानरेश की मदद किये जाने का भी उल्लेख मिलता है। यहां के शासकों को मुगल के आक्रमण का भी समना करना पडा। कई बार त्रिपुरा के शासकों ने बंगाल के सुलतान को भी पराजित किया है। १९वीं शताब्दि में वीरचन्द्रकिशोरमाणिक्यबाहादुर के कार्य काल में त्रिपुरा में नए युग का सूत्रपात हुआ था। इन्हों ने अपनी व्यवस्था को ब्रिटिश व्यवस्था के अनुसार सुधार कर व्यवस्थित करने का प्रयास किया। १५ अक्टूबर १९४९ पर्यन्त त्रिपुरा का आिधपत्यशासन किया। तदनन्तर १९५६ में राज्यों के पुनर्गठन के बाद केन्द्रशासित राज्य का दर्जा प्राप्त किया। यह बांलादेश और म्यामार की नदीघाटियों के बीच स्थत है। इसके तीन तरफ बांगलादेश और उत्तरपूर्व में यह असम और मिजोरम से जुडा है।

त्रिपुरा का भौगोलिक क्षेत्रफल १०,४९२ कि.मी. है, इसमें आठ जिल्लें हैं। यहां की स्थानीयभाषा बंगाली तथा कोकबरक है। राजकाज का व्यवहार बंगाली तथा अग्रेजी में ही किया जाता है।

त्रिपुरा का नामकरण तथा पुण्यक्षेत्र उनकोटि:

त्रिपुरा के नामकरण का आधार यह है कि त्रिपुर नामक ययातिवंश का ३९वां राजा था जिसके नाम पर इसका नामकरण किया गया होगा। एक मतानुसार भगवतीत्रिपुरेश्वरी के नाम से भी इसका नामकरण किया गया होगा। इितहासकार कैलासचन्द्र सिंह के अनुसार स्थानीय कोकबरक भाषा के दो शब्दों 'त्वि' और 'प्रा' का मिश्रण से त्रिपुरा हुआ होगा। जिसका अर्थ है 'त्वि' मतलब पानी और 'प्रा' का मतलब निकट है। बंगाल की खाडी के निकट होने से भी इसका अर्थ बोध होता है। पानी के निकट होने से इसे त्विप्रा >तिपरा> तिपुरा> त्रिपुरा में प्रवर्तित हुआ होगा। त्रिपुरा का एक जिल्ला उनकोटी है, यह शैवतीर्थ के रूप में माना जाता है। जनजातीयां शैव तथा शाक्त की उपासना करती आई है।

११-१२वीं शताब्दि ए. डि. का यह तीर्थ है। जो कि, अगरतला से १८० कि. मी. दूर पर है। उनकोटि का शाब्दिक अर्थ है – 'एककोटि से एक कम'। यहां के शैलिचत्र के चित्रकार 'युवल' नामक इजरायिल है। कुछ विद्वान् इसको सातवीं से नवीं शताब्दी का ही मानते है, पर कुछ का मानना है कि, शिल्प बारहवीं शताब्दि के ही है। यहां विशालिशलाओं पर उत्कीर्ण शिव की प्रतिमा का उत्कृष्ट रूपांकन दर्शकों को सहज ही आकर्षित करता है।

दन्तकथा के अनुसार यह कल्लू नामक कुम्भकार ने शिव के साथ कैलास पर्वत पर जाने के लिये तप किया था। तप के प्रभाव से शिव ने कल्लू के समक्ष शर्त रखी की, तुम एक रात में मिट्टी के एककोटि सिविलंग का निर्माण कर सकते हो तो, मैं तुमको अपने साथ ले जाउंगा। कल्लू मिट्टि के सिविलंग बनाने लगा परन्तु रात हो गयी और वह सो गया। एक करोड में एक शिविलंग कम बना जिसके कारण शिवजी कल्लू को दिये गये वचन से मुक्त हो गये। एककोटि में से एक कम होने के करन 'उनकोटी' नाम प्रख्यात हुआ। लहरदारपगडण्डियों और घने जंगलों का प्राकृतिक सुरम्य नजारा उनकोटी दर्शकों को इस शैवतीर्थ के प्रति आकर्षित करता है। यह पुरातात्विक तथा धार्मिक अनुसन्धान का केन्द्र है। उनकोटि के विषय में उनकोटि- तीर्थ प्रशंसा के सन्दर्भ प्राप्त होते हैं, जो इस कार हैं-

विन्ध्याद्रेः पादसंस्तुतो वरवक्रोः सुपुण्यदः।
दक्षिणस्यां नदस्यास्य पुण्यमनुनदी स्मृता॥
अनयोरन्तरा राजन् उन्नकोटिगिरि महान्।
यत्र तेऽपि तप: पूर्वं सुमहत् कपिलो मुनिः॥
तत्र वै किपल: तीर्थं किपलेन प्रकाशितम्।
लिङ्गञ्च किपलं तत्र सर्वसिद्धिप्रदं नृणाम्॥

यह क्षेत्र प्रशंसान्तर्गत मनुनदी जो कि वराकनदी के रूप में आज अपना अस्तित्व रखती है इस को इंगित किया गया है। त्रिपुरा का समीपस्थ क्षेत्र है। वायुपुराण में उल्लेख मिलता है कि-

यत्र तेपे तप: पूर्वं सुमहत् किपल मुनि:।
यत्र वै किपलतीर्थं त सिद्धेश्वरो हिर:॥

योगिनीतन्त्र में भी इसकी पुष्टि की गयी है-

पुरा कृतयुगे राजन् मनुना पूजित: शिव:।
तत्रैव विरले स्थाने मनुना नदीतटे॥

उनकोटि को लेकर भी वाराहितन्त्र में तीर्थ प्रशंसा की गई है-

उनकोटीपीठे मध्ये प्रधानं तानि शंकर:।

एकान्तदेवता: सर्वा: एवात दशभैरवा:॥
मनोरमोत्तरभागे उन्नभूमिं प्रदर्श्यते।
तत्र कोटीश्वरं लिङ्गं एकोनं स्वर्गमाप्नुयात्॥
तत्र मृतश्च कुण्डश्च निर्मितं विश्वकर्मणा।
श्राद्धश्च तर्पणश्चैव दर्शनं स्पर्शनमेव च॥
तत्राधिष्ठातृदेवानां सर्व तीर्थं फलं लभेत्।
तत्रोनकोटि स च लिङ्गं काशीविराजते॥
माघादि मासषट्केषु अक्षया यदि लभ्यते।
तद्दिने च महादेव सर्वतीर्थं फलं लभेत्॥

उनकोटीश्वरतीर्थ में स्नान-जप-तप- श्राद्ध-तर्पणादि का महत्व विर्णत हुआ है। जो अक्षय पुण्यदायक होता है। यहां का समाज अपनी आस्था को प्रकट करता है। यह तीर्थ अभी पुरातत्व विवभाग के द्वारा सुरक्षित है। धार्मिक अनुष्ठान प्राय: लुप्तवत् है। इस स्थान पर यदा-कदा जनजातिय लोग अपनी क्रियाएं संपादित करते होंगे। यहां हिन्दू देवीदेवताओं के शिला खण्ड पर गणेश-शिव-विष्णु-देवी आिद के शिल्प भारतीय सनातन परम्परा के अनुसन्धानकर्ताओं के लिये नूतनमार्ग को उद्घाटित करता है। जन श्रुति के अनुसार यहां पौराणिक मान्यता है कि एकबार देवसभा हुई थी जिसके कारण भगवान शिव को यह वनप्रान्तर साधना के लिये उपयुक्त लगा और वे वहीं रह गये। तभी से शिव की अविरामसाधना स्थल माना जाता है। नाथपरम्परा (जो शिवजि का ही पर्याय माना जाता है) का भी यहां प्राधान्य रहा है। आज भी त्रिपुरा में देवनाथ तथा नाथ उपनामधारी समाज शिवानुयायियों के रूप में अपनी प्रतिष्ठा रखते हैं। एक कथानक यह भी प्रचलित है कि भगवान शिव बनारस जाते समय इस स्थान पर निवास किये थे जिसके कारण शिवतीर्थ माना जाता है। यह सन्दर्भ कल्लू कुम्भकार के कथांश से तादात्म्य रखने के कारण शिवतीर्थ होने की पुष्टि करता है। यहां के शिल्प में गणेशजी का विग्रह है। ३० फिट ऊँची शिव की विशाल शिल्पाकृति रमणीय है। इसे उनोकोटीश्वर कालभैरव कहा जाता है-

उन्नकोटीपीठे मध्ये प्रधानं तानि शंकर:।
एकान्तदेवता: सर्वा: एवात दशभैरवा:॥

यहां भैरवगण का भी प्राधान्य माना जाता है, इसिलये उनकोटीश्वर को भैरव भी कहा जाता है। इसके सिर के उत्कीर्ण १० फिट तक लम्बे हैं। मकर पर सवार देवीगंगा का शिल्पांकन हुआ है। यहां नन्दी बैल की जमीन पर अधूरी उत्कीर्ण है। यहां जल प्रपात भी है, जो सीता कुण्ड के रूप में मान्यता रखता है।

उपसंहार:

इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि मध्यकाल के पालयुग के शिवपन्थ का प्रभाव था। इस स्थान पर तान्त्रिक हठयोगी जैसे अनेक शिवानुयायिसंप्रदाय के लोग रहे होंगे। अत: शिवपरम्परा का यह रमणीय स्थान त्रिपुरा के भूमि पर विद्यमान उन्नकोटी पुण्य शैवक्षेत्र भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में अपना विशेष महत्व रखता है॥

संदर्भ:

1. म. भा.,कर्णपर्व २५३/१०
2. राजमाला, पृ.१९ पर उद्धृत
3. म. भा., सभापर्व -८७/८-९
4. वायुपुराण ३\३५
5. योगिनीतन्त्र १२
6. वाराहितन्त्र २३-२७

सहायक ग्रन्थ:

1. श्रीराजरत्नाकरम्, चारु प्रेस्,१२३बि धनदेवी खान्ना रोड, कोलकता, २००३
2. श्रीराजरत्नाकरम्, त्रिपुइरा बाङ्ग्ला साहित्य ओ संस्कृति संसद, आगरतला, २००३
3. राजमाला, त्रिपुरा ट्राइबाल् रिसर्च इन्स्टिच्युट्, आगरतला, २००६
4. त्रिपुरार इतिहास, पारुल् प्रकाशन, आगरतला, १९९८